



Mr. Rink

21 Jul 1999

05:35 AM

Mumbai

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120489301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 20-21/07/1999
दिन _____: मंगल-बुधवार
जन्म समय _____: 05:35:00 घंटे
इष्ट _____: 58:29:11 घटी
स्थान _____: Mumbai
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:58:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:56:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:18 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:49:38 घंटे
सूर्योदय _____: 06:11:19 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:18:20 घंटे
दिनमान _____: 13:07:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 03:58:44 कर्क
लग्न के अंश _____: 25:01:19 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 2
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: साध्य
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रे-रेवती
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	आषाढ़	30
पंजाबी	संवत : 2056	श्रावण	6
बंगाली	सन् : 1406	श्रावण	4
तमिल	संवत : 2056	आदी	5
केरल	कोल्लम : 1174	कर्कदम	5
नेपाली	संवत : 2056	श्रावण	5
चैत्रादि	संवत : 2056	आषाढ़	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2056	आषाढ़	शुक्ल 9

पंचांग

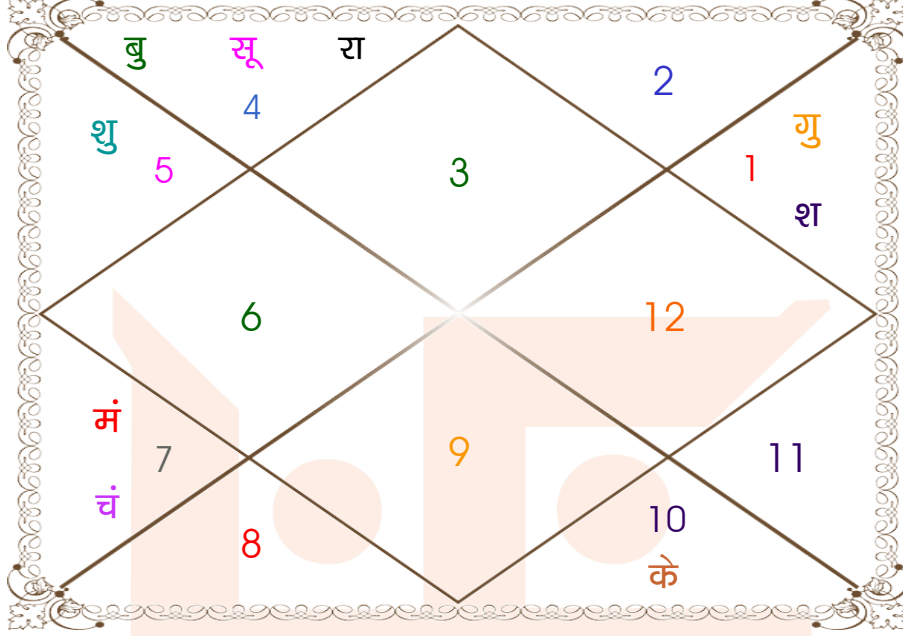
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 27:26:46
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:01:18 घंटे
जन्म योग _____ : स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 20:27:35 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 14:30:11 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 21:24:16
भभोग _____ : 66:41:05
भोग्य दशा काल _____ : राहु 12 वर्ष 2 मा 11 दि

घात चक्र

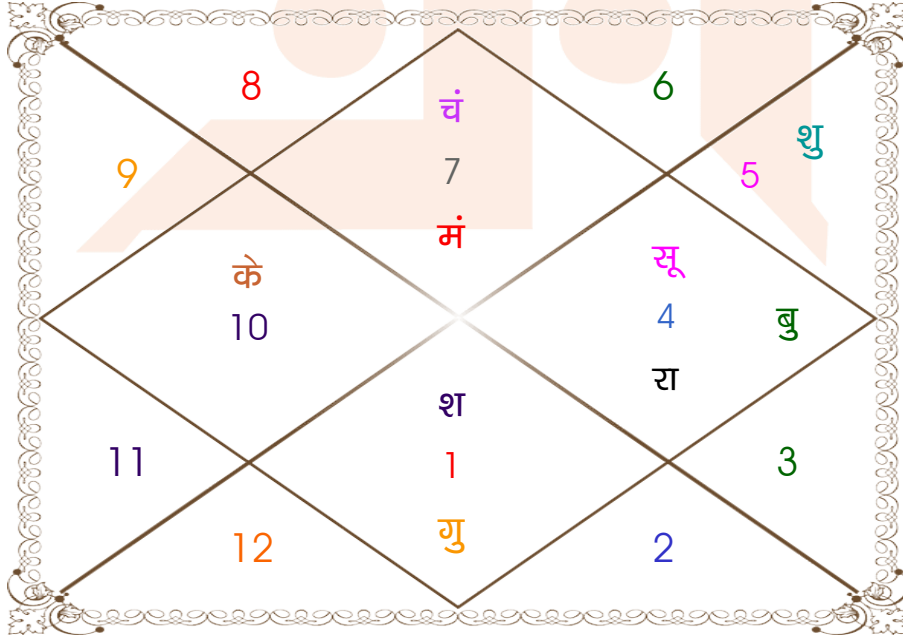
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	श गु		ल
			रा सू बु
के			शु
		मं चं	

लग्न कुण्डली

	श गु	
ल		
रा सू बु		के
शु	चं मं	

विंशोत्तरी
राहु 12वर्ष 2मा 11दि
राहु

21/07/1999

01/10/2113

राहु	01/10/2011
गुरु	01/10/2027
शनि	01/10/2046
बुध	01/10/2063
केतु	01/10/2070
शुक्र	01/10/2090
सूर्य	30/09/2096
चन्द्र	02/10/2106
मंगल	01/10/2113

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 4मा 8दि
संकटा

27/11/2025

27/11/2033

संकटा	07/09/2027
मंगला	27/11/2027
पिंगला	08/05/2028
धान्या	06/01/2029
भ्रामरी	27/11/2029
भद्रिका	07/01/2031
उल्का	08/05/2032
सिद्धा	27/11/2033

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506, 7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

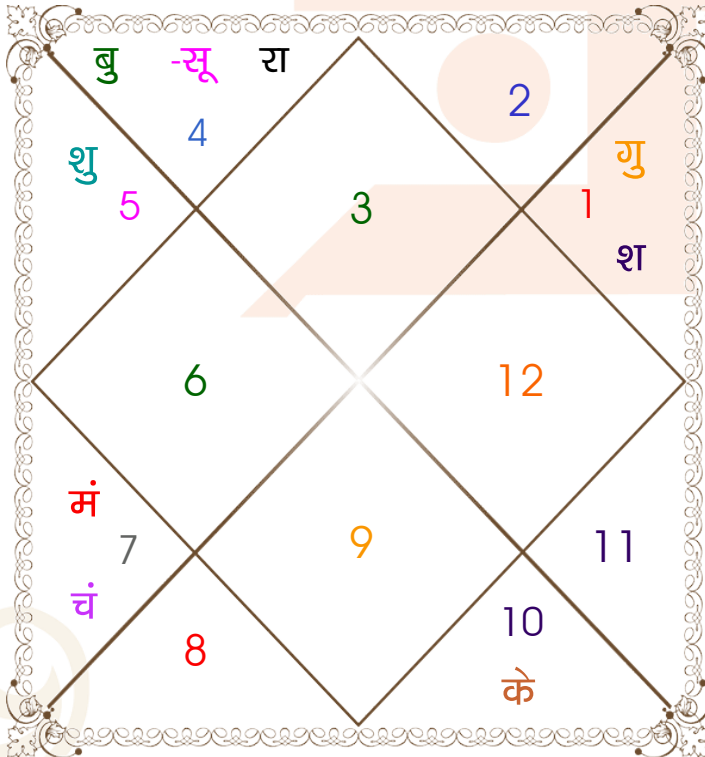
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	25:01:19	320:50:02	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	---
सूर्य			कर्क	03:58:44	00:57:16	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	मित्र राशि
चंद्र			तुला	10:57:54	12:01:15	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
मंगल			तुला	12:18:59	00:26:31	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
बुध	व	अ	कर्क	13:11:12	00:34:38	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			मेष	09:11:12	00:06:25	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	09:47:14	00:19:04	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
शनि			मेष	21:57:39	00:03:58	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	नीच राशि
राहु	व		कर्क	19:13:28	00:00:55	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	19:13:28	00:00:55	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	21:39:45	00:02:14	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
नेप	व		मक	09:16:27	00:01:37	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो	व		वृश्चि	14:06:47	00:00:53	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			मीन	19:38:01	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शुक्र	--

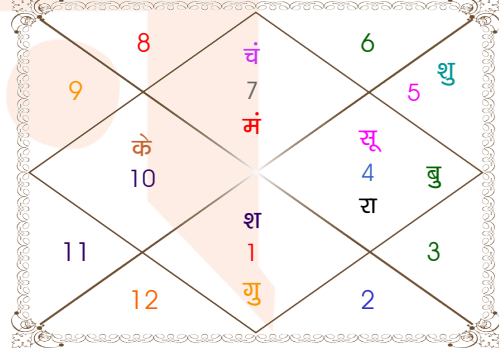
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:51

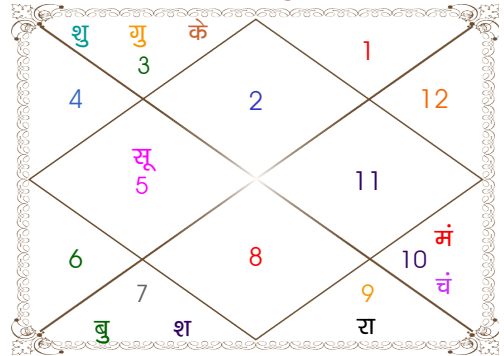
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 09:07:26	मिथुन 25:01:19
2	कर्क 09:07:26	कर्क 23:13:33
3	सिंह 07:19:40	सिंह 21:25:47
4	कन्या 05:31:54	कन्या 19:38:01
5	तुला 05:31:54	तुला 21:25:47
6	वृश्चिक 07:19:40	वृश्चिक 23:13:33
7	धनु 09:07:26	धनु 25:01:19
8	मकर 09:07:26	मकर 23:13:33
9	कुम्भ 07:19:40	कुम्भ 21:25:47
10	मीन 05:31:54	मीन 19:38:01
11	मेष 05:31:54	मेष 21:25:47
12	वृष 07:19:40	वृष 23:13:33

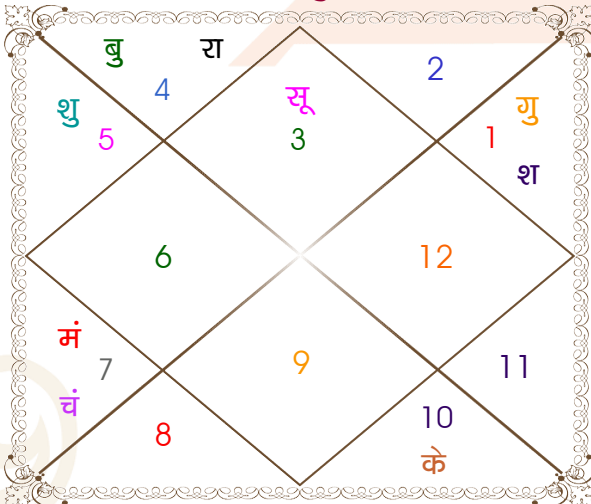
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन 25:01:19	25:01:19
2	कर्क 20:01:35	20:01:35
3	सिंह 17:57:54	17:57:54
4	कन्या 19:38:01	19:38:01
5	तुला 23:01:08	23:01:08
6	वृश्चिक 25:06:35	25:06:35
7	धनु 25:01:19	25:01:19
8	मकर 20:01:35	20:01:35
9	कुम्भ 17:57:54	17:57:54
10	मीन 19:38:01	19:38:01
11	मेष 23:01:08	23:01:08
12	वृष 25:06:35	25:06:35

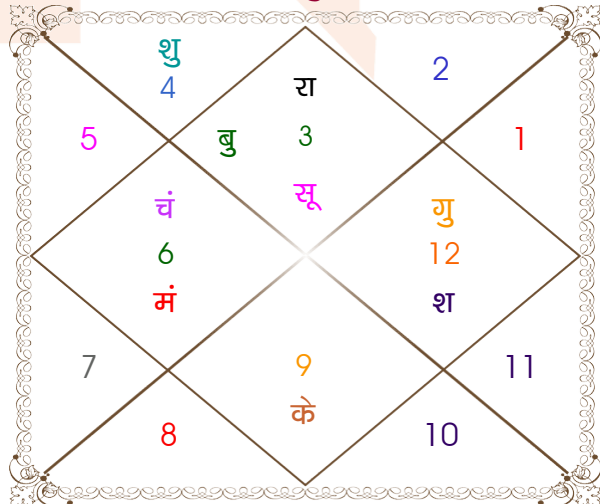
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



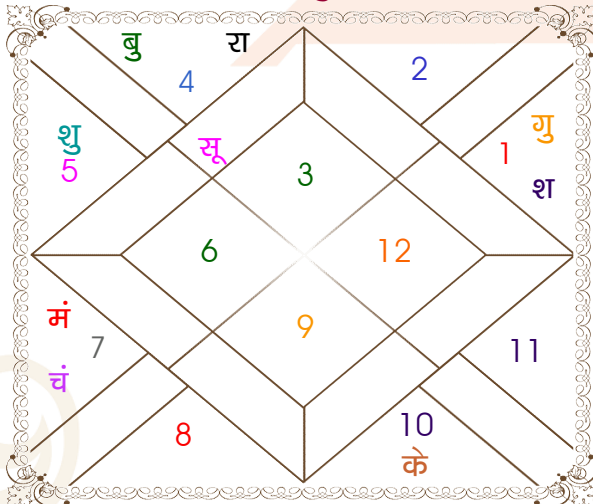
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	मुदित	आगम	7.11	52 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	शक्त	प्रकाश	1.32	47 %
मंगल	भातृ	भातृ	युवा	शक्त	प्रकाश	2.48	50 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	युवा	विकल	निद्रा	0.00	66 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	मुदित	सभा	3.66	65 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	खल	प्रकाश	2.10	67 %
शनि	आत्मा	आयु	वृद्ध	भीत	आगमन	0.02	49 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	प्रकाश	0.00	28 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	प्रकाश	0.00	28 %
कुल						16.69	

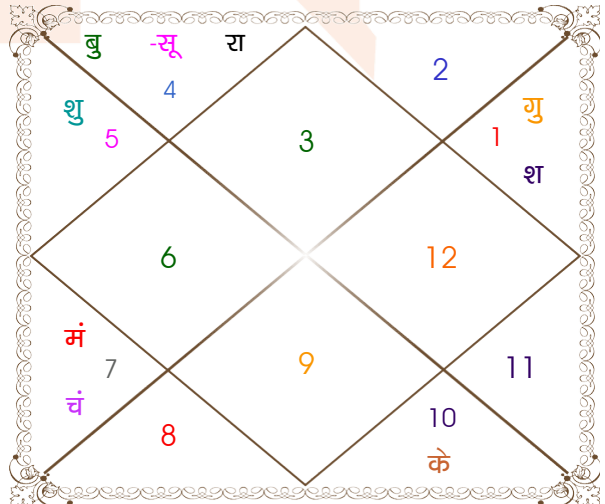
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 12 वर्ष 2 मास 11 दिन

राहु 18 वर्ष 21/07/1999 01/10/2011	गुरु 16 वर्ष 01/10/2011 01/10/2027	शनि 19 वर्ष 01/10/2027 01/10/2046	बुध 17 वर्ष 01/10/2046 01/10/2063	केतु 7 वर्ष 01/10/2063 01/10/2070
00/00/0000	गुरु 18/11/2013	शनि 04/10/2030	बुध 26/02/2049	केतु 27/02/2064
21/07/1999	शनि 31/05/2016	बुध 13/06/2033	केतु 23/02/2050	शुक्र 28/04/2065
शनि 12/09/2001	बुध 06/09/2018	केतु 23/07/2034	शुक्र 24/12/2052	सूर्य 03/09/2065
बुध 31/03/2004	केतु 13/08/2019	शुक्र 21/09/2037	सूर्य 31/10/2053	चंद्र 04/04/2066
केतु 19/04/2005	शुक्र 13/04/2022	सूर्य 03/09/2038	चंद्र 01/04/2055	मंगल 31/08/2066
शुक्र 19/04/2008	सूर्य 30/01/2023	चंद्र 03/04/2040	मंगल 28/03/2056	राहु 19/09/2067
सूर्य 13/03/2009	चंद्र 31/05/2024	मंगल 13/05/2041	राहु 16/10/2058	गुरु 25/08/2068
चंद्र 12/09/2010	मंगल 07/05/2025	राहु 19/03/2044	गुरु 21/01/2061	शनि 03/10/2069
मंगल 01/10/2011	राहु 01/10/2027	गुरु 01/10/2046	शनि 01/10/2063	बुध 01/10/2070
शुक्र 20 वर्ष 01/10/2070 01/10/2090	सूर्य 6 वर्ष 01/10/2090 30/09/2096	चंद्र 10 वर्ष 30/09/2096 02/10/2106	मंगल 7 वर्ष 02/10/2106 01/10/2113	राहु 18 वर्ष 01/10/2113 00/00/0000
शुक्र 30/01/2074	सूर्य 18/01/2091	चंद्र 31/07/2097	मंगल 28/02/2107	राहु 13/06/2116
सूर्य 30/01/2075	चंद्र 20/07/2091	मंगल 01/03/2098	राहु 17/03/2108	गुरु 07/11/2118
चंद्र 30/09/2076	मंगल 25/11/2091	राहु 31/08/2099	गुरु 21/02/2109	शनि 22/07/2119
मंगल 30/11/2077	राहु 18/10/2092	गुरु 31/12/2100	शनि 02/04/2110	00/00/0000
राहु 30/11/2080	गुरु 06/08/2093	शनि 02/08/2102	बुध 30/03/2111	00/00/0000
गुरु 01/08/2083	शनि 19/07/2094	बुध 01/01/2104	केतु 26/08/2111	00/00/0000
शनि 01/10/2086	बुध 26/05/2095	केतु 01/08/2104	शुक्र 25/10/2112	00/00/0000
बुध 31/07/2089	केतु 01/10/2095	शुक्र 02/04/2106	सूर्य 02/03/2113	00/00/0000
केतु 01/10/2090	शुक्र 30/09/2096	सूर्य 02/10/2106	चंद्र 01/10/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भूभाग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 12 वर्ष 2 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु 07/05/2025 01/10/2027	शनि - शनि 01/10/2027 04/10/2030	शनि - बुध 04/10/2030 13/06/2033	शनि - केतु 13/06/2033 23/07/2034	शनि - शुक्र 23/07/2034 21/09/2037
राहु 16/09/2025 गुरु 11/01/2026 शनि 29/05/2026 बुध 01/10/2026 केतु 21/11/2026 शुक्र 16/04/2027 सूर्य 30/05/2027 चंद्र 11/08/2027 मंगल 01/10/2027	शनि 23/03/2028 बुध 25/08/2028 केतु 29/10/2028 शुक्र 30/04/2029 सूर्य 24/06/2029 चंद्र 23/09/2029 मंगल 26/11/2029 राहु 10/05/2030 गुरु 04/10/2030	बुध 20/02/2031 केतु 18/04/2031 शुक्र 29/09/2031 सूर्य 17/11/2031 चंद्र 07/02/2032 मंगल 04/04/2032 राहु 30/08/2032 गुरु 08/01/2033 शनि 13/06/2033	केतु 06/07/2033 शुक्र 12/09/2033 सूर्य 02/10/2033 चंद्र 05/11/2033 मंगल 28/11/2033 राहु 28/01/2034 गुरु 23/03/2034 शनि 26/05/2034 बुध 23/07/2034	शुक्र 31/01/2035 सूर्य 30/03/2035 चंद्र 05/07/2035 मंगल 10/09/2035 राहु 01/03/2036 गुरु 03/08/2036 शनि 02/02/2037 बुध 16/07/2037 केतु 21/09/2037
शनि - सूर्य 21/09/2037 03/09/2038	शनि - चंद्र 03/09/2038 03/04/2040	शनि - मंगल 03/04/2040 13/05/2041	शनि - राहु 13/05/2041 19/03/2044	शनि - गुरु 19/03/2044 01/10/2046
सूर्य 08/10/2037 चंद्र 06/11/2037 मंगल 27/11/2037 राहु 18/01/2038 गुरु 05/03/2038 शनि 29/04/2038 बुध 17/06/2038 केतु 07/07/2038 शुक्र 03/09/2038	चंद्र 21/10/2038 मंगल 24/11/2038 राहु 19/02/2039 गुरु 07/05/2039 शनि 06/08/2039 बुध 27/10/2039 केतु 30/11/2039 शुक्र 06/03/2040 सूर्य 03/04/2040	मंगल 27/04/2040 राहु 27/06/2040 गुरु 20/08/2040 शनि 23/10/2040 बुध 19/12/2040 केतु 12/01/2041 शुक्र 20/03/2041 सूर्य 10/04/2041 चंद्र 13/05/2041	राहु 16/10/2041 गुरु 04/03/2042 शनि 16/08/2042 बुध 10/01/2043 केतु 12/03/2043 शुक्र 02/09/2043 सूर्य 24/10/2043 चंद्र 19/01/2044 मंगल 19/03/2044	गुरु 21/07/2044 शनि 14/12/2044 बुध 24/04/2045 केतु 17/06/2045 शुक्र 18/11/2045 सूर्य 04/01/2046 चंद्र 22/03/2046 मंगल 15/05/2046 राहु 01/10/2046
बुध - बुध 01/10/2046 26/02/2049	बुध - केतु 26/02/2049 23/02/2050	बुध - शुक्र 23/02/2050 24/12/2052	बुध - सूर्य 24/12/2052 31/10/2053	बुध - चंद्र 31/10/2053 01/04/2055
बुध 02/02/2047 केतु 25/03/2047 शुक्र 19/08/2047 सूर्य 02/10/2047 चंद्र 14/12/2047 मंगल 04/02/2048 राहु 15/06/2048 गुरु 10/10/2048 शनि 26/02/2049	केतु 19/03/2049 शुक्र 19/05/2049 सूर्य 06/06/2049 चंद्र 06/07/2049 मंगल 27/07/2049 राहु 19/09/2049 गुरु 07/11/2049 शनि 03/01/2050 बुध 23/02/2050	शुक्र 15/08/2050 सूर्य 06/10/2050 चंद्र 31/12/2050 मंगल 01/03/2051 राहु 03/08/2051 गुरु 19/12/2051 शनि 31/05/2052 बुध 25/10/2052 केतु 24/12/2052	सूर्य 09/01/2053 चंद्र 04/02/2053 मंगल 22/02/2053 राहु 09/04/2053 गुरु 21/05/2053 शनि 09/07/2053 बुध 22/08/2053 केतु 09/09/2053 शुक्र 31/10/2053	चंद्र 13/12/2053 मंगल 12/01/2054 राहु 31/03/2054 गुरु 08/06/2054 शनि 29/08/2054 बुध 10/11/2054 केतु 10/12/2054 शुक्र 06/03/2055 सूर्य 01/04/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल 01/04/2055 28/03/2056	बुध - राहु 28/03/2056 16/10/2058	बुध - गुरु 16/10/2058 21/01/2061	बुध - शनि 21/01/2061 01/10/2063	केतु - केतु 01/10/2063 27/02/2064
मंगल 22/04/2055 राहु 16/06/2055 गुरु 03/08/2055 शनि 29/09/2055 बुध 20/11/2055 केतु 11/12/2055 शुक्र 09/02/2056 सूर्य 27/02/2056 चंद्र 28/03/2056	राहु 15/08/2056 गुरु 17/12/2056 शनि 14/05/2057 बुध 23/09/2057 केतु 16/11/2057 शुक्र 20/04/2058 सूर्य 06/06/2058 चंद्र 22/08/2058 मंगल 16/10/2058	गुरु 03/02/2059 शनि 14/06/2059 बुध 10/10/2059 केतु 27/11/2059 शुक्र 13/04/2060 सूर्य 24/05/2060 चंद्र 01/08/2060 मंगल 18/09/2060 राहु 21/01/2061	शनि 25/06/2061 बुध 12/11/2061 केतु 08/01/2062 शुक्र 21/06/2062 सूर्य 09/08/2062 चंद्र 30/10/2062 मंगल 26/12/2062 राहु 23/05/2063 गुरु 01/10/2063	केतु 09/10/2063 शुक्र 03/11/2063 सूर्य 11/11/2063 चंद्र 23/11/2063 मंगल 02/12/2063 राहु 24/12/2063 गुरु 13/01/2064 शनि 06/02/2064 बुध 27/02/2064
केतु - शुक्र 27/02/2064 28/04/2065	केतु - सूर्य 28/04/2065 03/09/2065	केतु - चंद्र 03/09/2065 04/04/2066	केतु - मंगल 04/04/2066 31/08/2066	केतु - राहु 31/08/2066 19/09/2067
शुक्र 08/05/2064 सूर्य 29/05/2064 चंद्र 04/07/2064 मंगल 29/07/2064 राहु 01/10/2064 गुरु 26/11/2064 शनि 02/02/2065 बुध 03/04/2065 केतु 28/04/2065	सूर्य 04/05/2065 चंद्र 15/05/2065 मंगल 23/05/2065 राहु 11/06/2065 गुरु 28/06/2065 शनि 18/07/2065 बुध 05/08/2065 केतु 13/08/2065 शुक्र 03/09/2065	चंद्र 21/09/2065 मंगल 03/10/2065 राहु 04/11/2065 गुरु 02/12/2065 शनि 05/01/2066 बुध 04/02/2066 केतु 17/02/2066 शुक्र 24/03/2066 सूर्य 04/04/2066	मंगल 13/04/2066 राहु 05/05/2066 गुरु 25/05/2066 शनि 18/06/2066 बुध 09/07/2066 केतु 17/07/2066 शुक्र 11/08/2066 सूर्य 19/08/2066 चंद्र 31/08/2066	राहु 28/10/2066 गुरु 18/12/2066 शनि 16/02/2067 बुध 12/04/2067 केतु 04/05/2067 शुक्र 07/07/2067 सूर्य 26/07/2067 चंद्र 27/08/2067 मंगल 19/09/2067
केतु - गुरु 19/09/2067 25/08/2068	केतु - शनि 25/08/2068 03/10/2069	केतु - बुध 03/10/2069 01/10/2070	शुक्र - शुक्र 01/10/2070 30/01/2074	शुक्र - सूर्य 30/01/2074 30/01/2075
गुरु 03/11/2067 शनि 27/12/2067 बुध 13/02/2068 केतु 04/03/2068 शुक्र 30/04/2068 सूर्य 17/05/2068 चंद्र 14/06/2068 मंगल 04/07/2068 राहु 25/08/2068	शनि 28/10/2068 बुध 24/12/2068 केतु 17/01/2069 शुक्र 25/03/2069 सूर्य 14/04/2069 चंद्र 18/05/2069 मंगल 11/06/2069 राहु 10/08/2069 गुरु 03/10/2069	बुध 24/11/2069 केतु 15/12/2069 शुक्र 13/02/2070 सूर्य 03/03/2070 चंद्र 02/04/2070 मंगल 24/04/2070 राहु 17/06/2070 गुरु 04/08/2070 शनि 01/10/2070	शुक्र 21/04/2071 सूर्य 21/06/2071 चंद्र 01/10/2071 मंगल 11/12/2071 राहु 10/06/2072 गुरु 20/11/2072 शनि 01/06/2073 बुध 20/11/2073 केतु 30/01/2074	सूर्य 17/02/2074 चंद्र 20/03/2074 मंगल 10/04/2074 राहु 04/06/2074 गुरु 23/07/2074 शनि 18/09/2074 बुध 09/11/2074 केतु 30/11/2074 शुक्र 30/01/2075

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

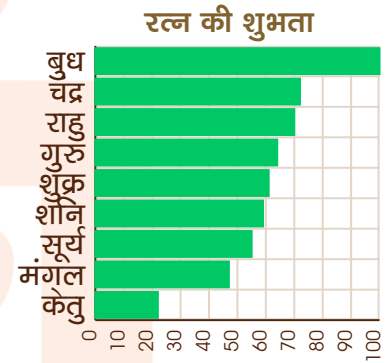
मूलांक	3
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 2
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, स्वास्थ्य, सुख
मोती	चंद्र	72%	सन्तति सुख, धन
गोमेद	राहु	70%	धन, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	64%	धनार्जन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	61%	पराक्रम, कम खर्च, सन्तति सुख
नीलम	शनि	59%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	55%	धन, पराक्रम
मूंगा	मंगल	47%	सन्तति कष्ट, हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	22%	दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	01/10/2011	34%	59%	22%	100%	64%	67%	66%	83%	0%
गुरु	01/10/2027	61%	78%	55%	88%	77%	47%	59%	70%	22%
शनि	01/10/2046	34%	59%	22%	100%	64%	67%	72%	77%	0%
बुध	01/10/2063	61%	59%	47%	100%	64%	67%	59%	70%	22%
केतु	01/10/2070	34%	59%	55%	100%	64%	67%	44%	58%	47%
शुक्र	01/10/2090	34%	59%	47%	100%	64%	73%	66%	77%	34%
सूर्य	30/09/2096	67%	78%	55%	100%	70%	47%	44%	58%	0%
चंद्र	02/10/2106	61%	84%	47%	100%	64%	61%	59%	58%	0%
मंगल	01/10/2113	61%	78%	61%	88%	70%	61%	59%	58%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
शुभ
सम
सम

क्षेत्र

कम खर्च
सुख
सन्तति सुख
शत्रु से कष्ट
दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506, 7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करें तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान् रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ाएं व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप में रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यों के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती है। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीडित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग में कमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यों में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते हैं। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यों में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विब्रम शांत एवं हास्य प्रवृत्ति से युक्त होते हैं। वे बुद्धिमान होते हैं तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरुचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपकी विशेष रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगे।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित पुरुष समझे जाएंगे।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृत्ति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरुष होंगे तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर
सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृत्ति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रुचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रुचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्कों को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधों में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा एवं सुख-दुख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रुचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके समस्त कार्य कलाओं में बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। गंभीर समस्याओं का समाधान आप अल्प समय में ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक एवं धर्म शास्त्रों के प्रति आपकी रुचि कम ही होगी परंतु आधुनिक एवं भौतिक शास्त्रों में विशेष रुचिशील होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से इनका ज्ञानार्जन करेंगे। भौतिक विज्ञान तथा आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में आप कोई शोध कार्य भी कर सकते हैं। इससे समाज में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा एक योग्य विद्वान के रूप में सभी लोग आपको जानेंगे।

शुक्र की राशि में मंगल की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप विशेष रुचिशील होंगे तथा इन प्रसंगों से आप में एक विशेष जोश एवं उत्साह का भाव उत्पन्न होगा लेकिन प्रेम प्रसंगों में आप भावुकता को कोई विशेष महत्व नहीं देंगे तथा एक आवश्यकता, मनोरंजन एवं मानसिक संतुष्टि के लिए उन्हें स्थापित करेंगे। लेकिन अपनी ओर से आप प्रेम क्षेत्र में आदर्श एवं मर्यादा का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। इससे इन क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं एवं परेशानियों से आप सुरक्षित रहेंगे।

पंचमभाव में मंगल की स्थिति के प्रभाव से पुत्र संतति प्राप्ति में आपको विलंब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन पुत्र प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति गुणवान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी एवं उनकी सेवा करने में भी तत्पर होंगे परंतु आज्ञा का पालन कम ही करेंगे तथा अपनी मर्जी से ही कार्यों को अधिक करेंगे। वे महत्वपूर्ण कार्यों में भी माता पिता की सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इससे आपको चिंतित नहीं होना चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे आप दोनों के मध्य सदभावना बनी रहेगी तथा एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास होगा जिससे समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे पूर्ण परिश्रमी एवं योग्य होंगे तथा अपने इन गुणों से परीक्षाओं में संतोष जनक परिणाम अर्जित करेंगे इससे उनके भविष्य के लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा बौद्धिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। वे पराक्रमी एवं व्यवहार कुशल भी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथापि तेजस्वी प्रवृत्ति होने के कारण यदा कदा सामाजिक जनों से उनका परस्पर विवाद भी हो सकता है लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त बच्चे कष्ट में आपकी देखभाल अवश्य करेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है तथा बुध के प्रभाव से उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान विदुषी एवं सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यों में वह निपुण होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगी इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से पुष्ट होंगी एवं अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह अवसरनुकूल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृत्ति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी आपको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है मीन राशि जलतत्व युक्त है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रम की इसमें अल्पता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप समय समय पर कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के भी इच्छुक हो सकते हैं लेकिन ये परिवर्तन वर्तमान एवं भविष्य के लिए लाभदायक ही होंगे।

बृहस्पति की राशि की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आप शिक्षक या व्याख्याता, अनुष्ठान कर्ता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर तथा सरकारी विभाग में सचिव सलाहकार या प्रशासनिक पद पर कार्य कर सकते हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा भविष्य में भी आप किसी उच्चपद या अधिकार को अर्जित करने में सफल होंगे। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों में यत्नपूर्वक अपनी आजीविका प्रारंभ करनी चाहिए। इससे आपकी मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

व्यापारिक क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। आप के लिए सुवर्ण आदि का व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय, वित्त कम्पनियों में पूंजी निवेश आदि से वांछित लाभ की प्राप्ति कर सकते हैं। साथ ही सरकारी टेन्डरो या सरकार से संबंधित कार्यों से भी आप प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का शुभारंभ करना चाहिए।

मीन राशि की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही आप उच्च धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था में भी किसी उच्च पद को प्राप्त कर सकते हैं। बृहस्पति की केंद्र भाव की यह स्थिति आपके लिए अत्याधिक शुभफलदायक होगी। अतः आपको ईमानदारी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यक्षेत्र में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता विद्वान् शिक्षित बुद्धिमान एवं मधुर स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः सभी लोग उनसे प्रभावित होंगे तथा उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का वे उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको प्रभावशाली व्यक्ति बनाने में पूर्ण रूप से तत्पर होंगे। उनके प्रभाव से आप कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त करेंगे तथा यश की भी प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनकी अभिलाशाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगे। आप दोनों के परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा आपस में उचित सामंजस्य रहेगा जिससे किसी भी प्रकार की मत वैभिन्यता नहीं रहेगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रुचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं औरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोतरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तियों को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्च भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ॐ भ्रां भ्रीं भ्रों सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएं। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएं।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर में की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारियों व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलूम वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुर्घटना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।